तौहीद के मसाइल

8

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफे़ अल्लाह तअला के लिये हैं जो सब जहानों का पालने वाला है। हम उसी की तअरीफ़ करते और उसी का शुक्र अदा करते हैं। अल्लाह के सिवाए कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है। कोई उसका साझी व शरीक नहीं और मुहम्मद सल्ललाहु अलेहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामती नाजि़ल हो मुहम्मद सल्ल. पर और उनकी आल व औलाद और असहाब रजि. पर ।

अम्मा बअद !

तौहीद

अल्लाह को अकेला मानना–उसकी ज़ात में, सिफ़ात (गुण) में और इबादात में तौहीद कहलाता है।

तौहीद की तीन किस्में है।

1. तौहीद फ़िज़्ज़ात 2. तौहीद फ़िल्इबादत 3. तौहीद फ़िस्सिफ़ात।

तौहीद फ़िज़्ज़ात

1. इर्शादे बारी तआला है ''कहो! वह अल्लाह अकेला है। वह सबसे बे नियाज़ है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई औलाद है, न वह किसी की औलाद है और न कोई उसका हमसर (उस जैसा) है।'' (इख़लास–1से4)

2. इर्शादे बारी तआला है ''वही अव्वल भी है और आखि़र भी, ज़ाहिर भी और पोशीदा भी और वह हर चीज़ का इल्म रखता है''। (हदीद–03)

अल्लाह अपनी ज़ात के साथ आसमानों के ऊपर ''अर्शे अज़ीम'' पर मुस्तवी है। (आराफ़–54, युनुस 03, रअद–02,ताहा–05,फ़ुर्कान–59, सज्दा–04, हदीद–04)

अबु हुरैरा रजि. से रिवायत है कि रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो अल्लाह आसमाने दुनिया पर नाजि़ल होता है और फ़रमाता है कौन है? जो मुझ से दुआ करे और मैं उसकी दुआ कुबुल करूं। कौन है? जो मुझ से अपनी हाजात मांगे और मैं उसे अता करूं। कौन है? जो मुझ से बख्शिश चाहे और मैं उसे बख़्श दूँ।'' (बुख़ारी–1145,6321)

3. इर्शादे बारी तआला है '' बहुत से चेहरे उस दिन तरो–ताज़ा और बा–रौनक होंगे और अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे।'' (कि़यामा–22–23)

जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि़. से रिवायत है कि हम नबी सल्ल. के पास बैठे हुए थे। आप सल्ल. ने चौहदवीं के चांद की तरफ़ देखा और फ़रमाया (जन्नत में) '' तुम अपने रब को इस तरह देखोगे जिस तरह इस चांद को देख रहे हो। (बुख़ारी–554,7434)

तौहीदे इबादत

1. इबादत की सब किस्में (ज़ुबानी हों, माली या जिस्मानी) सब अल्लाह के लिए ही होना चाहियें।

अल्लाह तआला का इर्शाद है '' कहो! मेरी नमाज़, मेरी सारी इबादतें, मेरा जीना

और मेरा मरना। सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है।'' (अनआम–162)
2. नमाज़ की तरह का क़याम अल्लाह तआला ही के लिए ख़ास है।
इर्शादे रब्बानी है ''अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (ख़ास तौर पर) बीच की नमाज़ (अस्र) की और अल्लाह के सामने इस तरह अदब से खड़े हो जैसे फ़रमाबर्दार ग़ुलाम खड़े होते है।'' (बक़रा–238)
मआविया रज़ि. से रिवायत है कि मैने नबी सल्ल. को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो शख़्स यह पसन्द करे कि लोग उसके सामने तस्वीर की तरह (बाअदब) खड़े रहें, वह अपनी जगह जहन्नम में बना ले।'' (तिर्मिज़ी–2536)
3. रूकू और सज्दा सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए ख़ास है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया '' ऐ लोगों जो ईमान लाए हों! रूकू करो, सज्दा करो और इबादत करो अपने रब की।'' (हज्ज–77)
4. तवाफ़ (सवाब की ग़रज से किसी जगह के गिर्द चक्कर लगाना) और ऐतेकाफ़ (किसी जगह सवाब की नीयत से बैठना) सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए ख़ास है। इर्शादे बारी तआला है ''हमने इब्राहीम और इस्माईल (अलैहि.) को ताकीद की थी कि मेरे इस घर को तवाफ़, ऐतेकाफ़, रूकू और सज्दा करने वालों के लिए पाक–साफ़ रखो।'' (बक़रा–125)
'' किसी क़ब्र पर बैठने से यह बेहतर है कि आदमी आग के अंगारे पर बैठ जाये जो उसके कपड़े और खाल तक को जला डाले।'' (अबु हुरैरा–मुस्लिम–1641)
5. नज़र, नियाज़, मन्नत और चढ़ावा सिर्फ़ अल्लाह ही के नाम का होना चाहिये ''बेशक अल्लाह ने हराम किया तुम पर! मुर्दार, खून ख़िन्जीर का गोश्त और हर वह चीज़ जो अल्लाह के अलावा किसी दूसरे के नाम कर दी जाए।'' (बक़रा–173, माईदा–03, अनआम–145 और नहल–115)
6. क़ुर्बानी सिर्फ़ अल्लाह के नाम की ही देनी चाहिये। ''जिस जानवर को अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह न किया गया हो, उसका गोश्त मत खाओ।'' (अनआम–121)
''अल्लाह ने लानत फ़रमाई है उस शख़्स पर जो ग़ैरूल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई और) के लिए जानवर ज़िब्ह करे।'' (अली रज़ि.–मुस्लिम–5417)
7. दुआ सिर्फ़ अल्लाह ही से बराहे रास्त मांगना चाहिये। '' ऐ नबी सल्ल.! मेरे बन्दे जब तुम से मेरे बारे में पुछें (तों उन्हें बता दो) कि मैं उनके क़रीब हूँ। जब कोई दुआ करने वाला मुझ से दुआ करता है तो मैं कुबुल करता हूँ।'' (बक़रा–186)
नौमान बिन बशीर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''दुआ ही इबादत है।'' फिर यह आयत तिलावत की ''मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ कुबुल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से कतराते हैं, मैं उन्हें जल्दी ही जहन्नम में दाख़िल करूंगा।'' (तिर्मिजी–4025)
8. पनाह सिर्फ़ अल्लाह तआला ही से मांगना चाहिये। ''कहो! मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब, इन्सानों के बादशाह, इन्सानों के हक़ीकी मअबूद की, उस वसवसे डालने वाले के शर से जो बार–बार पलट कर आता है। जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है, चाहे वोह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से।''(सूरहनास–आयत–1से6)
9. भरोसा सिर्फ़ अल्लाह तआला पर करना चाहिये। '' अगर अल्लाह तुम्हारी मदद पर हो तो कोई ताक़त तुम पर ग़ल्बा नहीं पा सकती और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद कर सके।'' (आले इम्रान–160)
10. रज़ा और ख़ुशनूदी अल्लाह की ही तलब करना चाहिये। ''रिश्तेदार, मिस्कीन और

मुसाफ़िर को उसका हक़ अदा करो। यही तरीक़ा बेहतर है उन लोगों के लिये जो अल्लाह की खुशनूदी चाहतें है। (रूम–आयत–38)

11. सबसे ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह से होना चाहिये। ''कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका हमसर बनाते हैं और उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी अल्लाह से मुहब्बत करना चाहिये। हालांकि ईमान वाले तो अल्लाह से टूट कर मुहब्बत करते हैं।'' (बक़र–165)

12. दीन और दुनिया के सब मामलात में इताअत सिर्फ़ अल्लाह की ही करना चाहियें। ''हमने हर उम्मत में रसूल भेजा और उसके ज़रिये सब को ख़बरदार कर दिया कि अल्लाह की इताअत करो और तागूत (गै़रूल्लाह) की इताअत से बचो।'' (नहल–36) ''लोगों ने अपने उलेमा और दरवेशों को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया।'' (तौबा–31) इस आयत की तशरीह में आप सल्ल. ने फ़रमाया ''उलेमा के हलाल कहे को हलाल और हराम कहे को हराम (बिना दलील के) मान लेना उन्हें रब बनाना है।'' (तिर्मिज़ी–2859)

तौहीद फ़िस्सिफ़ात

1. कायनात की हर चीज़ का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है। '' वह अल्लाह ही है, जिसके अलावा कोई मअबूद नहीं। वह बादशाह है और निहायत पाक है।'' (हश्र–आयत–23)

2. कायनात में हुकूमत और फ़रमारवाई के सब इख़्तियारात सिर्फ़ अल्लाह ही के पास हैं। '' हुक्म देना सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है। उसी ने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न की जाये।'' (युसुफ–आयत–40)

3. कायनात और नज़्मे कायनात का मुदब्बिर सिर्फ़ अल्लाह है। ''वह अल्लाह ही हे जिसने आसमानों को सतूनों के बगैर कायम किया फिर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ। उसीने सूरज व चांद को पाबन्द बनाया। (कायनात की) हर चीज़ (उसके हुक्म से) एक मुकर्रर वक्त तक के लिए चल रही है। अल्लाह ही सारे कामों की तदबीर फरमा रहा है।'' (रअद – आयत–02)

4 ज़मीन व आसमान के सब खज़ानों का मालिक सिर्फ अल्लाह है।
''ऐ नबी (सल्ल.)! इन से कहो कि में तुम से यह नहीं कहता की मेरे पास अल्लाह के खजाने है और ना में गैब का इल्म रखता हूं। (अनआम–आयत–50)

5. कयामत के दिन सिफारिश करने की इजाज़त देने या ना देने और सिफारिश कुबूल करने या ना करने का सारा इखतियार सिर्फ अल्लाह तआला ही को होगा। ''क्या अल्लाह को छोड़कर लोगों ने दूसरों को सिफारिशी बना रखा है? उनसे कहो/क्या वह सिफारिश करेगे, जिन के इखतियार में कुछ भी ना हो? और जब कि वह (मुर्दे तुम्हारी बाते) समझते भी ना हो? कहो! सिफारिश सारी की सारी अल्लाह के बस में है। (जिसे चाहे सिफारिश करने की इजाज़त दे, जिसे चाहे ना दे और जिसकी सिफारिश चाहे कुबूल करे और जिसकी चाहे कुबूल ना करे) आसमानों ओर ज़मीन की बादशाही का वही मालिक है।'' (ज़ुमर–आयत– 43–44)

6. क़यामत के दिन जज़ा या सज़ा देने का हक सिर्फ अल्लाह को होगा। '' अल्लाह तआला नूह अलेहि और लूत अलेहि. की बीवियों को बतौर मिसाल पेश करता है कि वह हमारे सालेह बन्दों के निकाह में थी। मगर उन्होने अपने शोहरों से खयानत की और वह दोनों अल्लाह के मुकाबले मे उनके कुछ भी काम न आ सके। दोनों से कह दिया गया कि जाओ आग में जाने वालों के साथ तुम भी आग मे चली जाओ।'' (तहरीम–आयत–10)

7. गुनाह माफ करने या न करने का हक सिर्फ अल्लाह ही को है।

''ऐ नबी (सल्ल.)! तुम इन (मुनाफिको) के लिए मगफिरत की दुआ करों या न करो। (एक ही बात है) अगर तुम 70 बार भी इन्हे माफ करने की दरख्वास्त करोगे तो भी अल्लाह उन्हे हर गिज़ माफ नहीं करेगा।'' (तौबा–आयत–80)

8. अल्लाह अपनी मर्जी और इरादा पूरा करने के लिये किसी का मोहताज नहीं। ''अल्लाह जब किसी काम का इरादा करता है तो उसका काम बस यही है कि उसे हुक्म दे। हो जा और वह हो जाता है।'' (यासीन–आयत–82)

9. शरीयत साज़ी, हलाल व हराम और जाईज़ व नाजाईज़ तय तरने का हक़ सिर्फ अल्लाह ही को है। ''ऐ नबी सल्ल. तुम क्यो उस चीज़ को (अपने लिये) हराम करते हो, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल किया है। (तहरीम आयत 01)

10. गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह को है। ''ऐ नबी (सल्ल.)! इन से कहो! में अपनी ज़ात के लिए भी किसी नफे या नुकसान का मालिक नहीं। अल्लाह ही जो कुछ चाहता है वही होता है। अगर मुझे गैब का इल्म होता तो में बहुत से फायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचता।'' (आराफ़ आयत 188)

11. हर वक्त और हर जगह बन्दों की दुआ सुनने वाला सिर्फ अल्लाह है।
''ऐ नबी (सल्ल.)! मेरे बन्दे जब तुमसे मेरे बारे में पूछे तो उन्हे बता दो कि में उनसे करीब हूं। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है तो में उसकी पुकार सुनता हूं ओर जवाब देता हूं (बकरा–आयत 186)

12. हर जगह और हर वक्त हाजिर (अपनी कुदरत व इल्म के ऐतेबार से) सिर्फ अल्लाह ही है।'' अल्लाह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो और जो काम तुम करते हो, अल्लाह उसे जानता (देखता) है।'' (हदीद–आयत 04)

13. दिलों में छिपे भेद (राज़) सिर्फ अल्लाह जानता है।'' तुम लोग चाहे आहिस्ता बात करो या ऊंची आवाज़ से। वह तो दिलों के भेद (भी) जानता है।'' (मुल्क आयत 13)

14. दीन व दुनिया की सारी भलाईयां सिर्फ अल्लाह के हाथ मे है। ''कहो! ऐ अल्लाह कायनात के मालिक। तू जिसे चाहे हुकूमत दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे इज्ज़त दे और जिसको चाहे ज़लील करें। भलाई तेरे बस मे है। बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है।'' (आले इमरान आयत 26)

15. दिलों को फेरने वाला सिर्फ अल्लाह है।'' रसूल सल्ल.! तुम्हे उस चीज़ की तरफ बुलाता है जो तुम्हे ज़िन्दगी बख्शने वाली है। जान रखो कि अल्लाह बन्दे और उसके दिल के बीच हाइल हो जाता है'' (अनफ़ाल–आयत 24)

16. रिज़्क देने और न देने वाला सिर्फ अल्लाह है। ''अपनी औलाद को गरीबी के डर से कत्ल न करों। हम उन्हें भी रिज़्क देगे और तुम्हे भी।'' (इसरा–आयत 31)

17. रिज़्क में तंगी और कुशादगी करने वाला भी अल्लाह है।'' ऐ नबी सल्ल.! इन से कहो मेरा रब जिसे चाहता है कुशादा रिज़्क देता है, और जिसे चाहता हे कम (थोड़ा) रिज़्क देता है।'' (सबा–आयत 36)

18. औलाद देने व न देने वाला सिर्फ अल्लाह है।

19. बेटे–बेटियां देने वाला सिर्फ अल्लाह है।'' अल्लाह जिसे चाहता है बेटियां देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है। जिसे चाहता है बेटे–बेटियां दोनों देता है और जिसे चाहता है बांझ कर देता है। वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर कादिर है।'' (शुरा–आयत 49–50)

20. सेहत ओर शिफ़ा देना वाला सिर्फ अल्लाह है।'' अल्लाह ने मुझे पैदा किया, वही मेरी रहनुमाई करता है। वही मुझे खिलाता–पिलाता है। जब बीमार होता हूं तो मुझे शिफा

देता है।'' (शोअरा–आयत 78–80)

21. हिदायत देना सिर्फ अल्लाह के इख्तियार में है। ''ऐ नबी सल्ल.! तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है उसे हिदायत देता है।'' (कसस–आयत 56)

22. नेकी करने और गुनाह से बचने की तौफीक देने वाला अल्लाह है। शुअैब अलेहि. ने अपनी कौम से कहा '' मैं तो जहां तक हो सके इस्लाह चाहता हू और इस बारे में मुझे तौफीक का मिलना अल्लाह ही की तरफ से है।'' (हूद–आयत 88)

23. नफे और नुकसान का मालिक अल्लाह है।

24. तकदीर का मालिक अल्लाह है। '' ऐ नबी सल्ल.! कहो! कौन है जो तुम्हारे मामलात में अल्लाह के फेसले को रोकने का कुछ भी हक़ रखता हो? अगर अल्लाह तुम्हे नुकसान पहुचाना चाहे या नफा पहुंचाना चाहे।'' (फत्ह–आयत 11)

25. ज़िन्दगी और मौत सिर्फ अल्लाह के हाथ में है। ''वोह अल्लाह ही हैं जो जिन्दा करता है और मौत देता है।'' (मुअमिन–आयत 68)

तौहीद की अहमियत

1 अकीदा ए तौहीद पर ईमान न लाने वाले जहन्नम में जायेंगे।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते है कि रसूल सल्ल. ने फरमाया ''जिसने अल्लाह से इस हाल में मुलाकात की कि उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया, वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से इस हाल में मिला कि उसके साथ शिर्क किया , वह जहन्नम में जायेंगा।'' (मुस्लिम 127–128)

2. तौहीद का इकरार न करने वालों को नबी सल्ल. से करीबी रिश्ता भी जहन्नम के अज़ाब से न बचा सकेगा।

इब्ने अब्बास रजि. से रिवायत है कि रसूल सल्ल. ने फरमाया जहन्नमियों में से सबसे हल्का अज़ाब अबु तालिब को होगा। वह आग की दो जूतियां पहने होंगे, जिससे उनका दिमाग खोल रहा होगा।'' (मुस्लिम–339)

3. तौहीद पर ईमान न रखने वाले को उसके नैक आमाल कयामत के दिन कोई फायदा न देंगे। आयशा रजि़ फरमाती है कि मैंने रसूल सल्ल. से अर्ज किया कि ''जदआन का बेटा ज़माना ऐ जाहिलियत में सिला रहमी करता था। मिस्कीन को खाना खिलाता था। क्या यह काम उसे (कयामत के दिन) फायदा देंगें। आप रसूल. सल्ल. ने इर्शाद फरमाया उसे कुछ फायदा न देगें। क्योंकि उसने कभी यूं नहीं कहा ऐ मेरे रब कयामत के दिन मेरे गुनाह माफ फरमा।'' (मुस्लिम–342)

तौहीद की फ़ज़ीलत

1. तौहीद पर ईमान गुनाहों के कफ्फारे का सबब बनेगा।

अबुज़र रजि. कहते है नबी सल्ल. ने फरमाया ''जिस शख्स ने ला इलाहा इल्ललाह कहा और उसी पर मरा वह जन्नत में दाखिल होगा।'' मैंने अर्ज किया ख्वाह ज़िना किया हो या चोरी की हो? आप सल्ल. ने फ़रमाया ''हां'' ख़्वाह ज़िना किया हो या चोरी की हों।'' यह बात आप सल्ल़ ने तीन बार इर्शाद फरमाई।'' (मुस्लिम–129, तिर्मिजी–2430)

2. खुलुस दिल से तौहीद का इकरार करने वालों के लिए रसूल सल्ल. सिफारिश करेगें।

(क) अबु हुरेरा रजि. रिवायत है कि फरमाया नबी सल्ल. ने ''कयामत के दिन मेरी सिफारिश से फायदा उठाने वाले वह लोग होंगे, जिन्होने सच्चे दिल से ला इलाहा इल्ललाह का इकरार किया।'' (बुखारी–099, 6570)

(ख) ''हर नबी के लिए एक दुआ ऐसी है जो जरूर कबूल होती है। सब नबियों ने वह दुआ दुनियां में ही मांग ली। लेकिन मेने अपनी दुआ कयामत के दिन अपनी उम्मत की शिफाअत के लिए बचा रखी है। मेरी शिफाअत इन्शाह अल्लाह हर उस शख्स के लिए होगी जो इस हाल में मरा कि उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं किया।'' (अबु हुरेरा–मुस्लिम–324)

3. तौहीद पर मरने वाला जन्नत मे दाखिल होगा। ''जो शख्य इस हाल में मरे कि उसे ला इलाहा इल्ललाह का इल्म (यकीन) हो तो वह जन्नत मे जायेगा।'' (उस्मान रजि. –मुस्लिम–030)

4. तौहीद की गवाही देने वाला जहन्नम से बच जायेगा। मआज़ बिन जबल रजि. से नबी सल्ल. ने फरमाया '' जो शख्स गवाही दे कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्ल. उसके बन्दे और रसूल है। अल्लाह उसको जहन्नम पर हराम कर देगा। (अनस रजि.–मुस्लिम–039)

वज़ाहत:– तौहीद पर यकीन रखने और अमल करने वाला अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद या अल्लाह की तरफ से गुनाह माफ किये जाने के बाद जन्नत में जायेगा और जिस तरह मुश्रिक हमेशा जहन्नम मे रहेगा, उसी तरह तौहीद परस्त हमेशा जन्नत में रहेगा।

अल्लाह तआला ने खुद शहादत दी हे कि ''उसके सिवाय कोई मअबूद नहीं और फरिश्ते और इल्म वाले लोग जो इन्साफ पर कायम है, वह भी (यही गवाही देते है)।'' (आले इमरान–आयत–18)

इसी तरह सभी नबियों और रसूलों ने भी सबसे पहले अपनी–अपनी क़ौमों को अक़ीदा–ए–तौहीद की दावत दी जैसे:–

1.	नूह अलेहिस्सलाम	–	आराफ़	–	आयत–59
2.	हुद अलेहिस्सलाम	–	आराफ़	–	आयत–65
3.	सालेह अलेहिस्सलाम	–	आराफ़	–	आयत–73
4.	शुअैब अलेहिस्सलाम	–	आराफ़	–	आयत–85
5.	इब्राहिम अलेहिस्सलाम	–	अन्कबूत	–	आयत–16–17
6.	युसुफ अलेहिस्सलाम	–	युसुफ	–	आयत–40
7.	ईसा अलेहिस्सलाम	–	ज़ुख़रूफ़	–	आयत–64
8.	मोहम्मद सल्ल.	–	सुवाद	–	आयत 65–66

अल्लाह वहदहु ला शरीक से दुआ है कि वह हम सभी को अक़ीदा–ए–तौहीद को जानने समझने और उस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये। हमारी गल्तियों, कौताहियों और गुनाहो को अपने फ़ज़्ल से माफ फरमा दें। साथ ही हमे हक़ बात कहने–सुनने और उस पर अमल करने की तौफीक दें। आमीन या रब्बल आलामीन

''मैं तो जहां तक हो सके इस्लाह चाहता हू और इस बारे में मुझे तोफीक का मिलना अल्लाह ही की तरफ से है।'' (हूद–आयात 88)

''व आखिरू दअवाना अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बल आलामीन।''

अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि
हमारी ग़लती पर हमारी इस्लाह फ़रमाए।
शुक्रिया!
दिनांक 01/01/2009

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो.9214836639